Dainik Bhaskar Date: 08.02.2018

आईआईटी की तैयारी में ज़िंदगी के गणित से दूर हो जाते हैं बच्चे : डॉ. फाटक

इंदौर के जीएसआईटीएस से इंजीनियरिंग कर चुके आईआईटी बॉम्बे के प्रो. डॉ. दीपक बी. फाटक बुधवार को सन्मंत्रणा कॉन्फ्रेंस में शामिल होने आए, उन्होंने आईआईटी के लिए ड्रॉप लेने के मसले पर बातचीत की

सिटी रिपोर्टर | इंदौर

'आईआईटी जैसे संस्थानों में एडमिशन के लिए कई स्टूडेंट्स एक या दो साल का ड्रॉप लेते हैं। 12वीं के बाद के ये दो साल जिंदगी का बेहद खूबसूरत समय होता है लेकिन स्टूडेंट्स किताबों में डूबे रहते हैं। वो मैदान, मिट्टी और खेलों से दूर हो जाते हैं, जबकि ह्यूमन डेवलपमेंट के लिए ये ज्यादा जरूरी है। जिंदगी सिर्फ यही तो नहीं। जिसने कविताएं पढ़कर उनका आनंद नहीं लिया उसने शायद जिंदगी की लय ही नहीं पाई। सीने में धड़कते जज्बात का महसूस ही नहीं किया तो जीवन ही कहां जिया। एक संस्थान में दाखिला पाने के लिए ड्रॉप लेने वाले हमारे बच्चे फिजिक्स-केमिस्ट्री मैथ्स पढ़ते-पढ़ते जिंदगी के गणित से ही दूर हो जाते हैं। मेरा मानना है कि ड्रॉप लेने की जगह स्टूडेंट्स को आगे पढ़ाई जारी रखनी चाहिए। लाखों बच्चे जेईई देते हैं, ड्रॉप लेने के बाद भी सिलेक्शन की गारंटी तो नहीं होती।'

वैष्णव विद्यापीठ विश्वविद्यालय में इंटरनेशनल कॉन्फ्रेंस सन्मंत्रणा के आखिरी दिन आए डॉ. दीपक बी. फाटक ने ये बातें सिटी भास्कर से कही। वे आईआईटी बॉम्बे में कम्प्यूटर साइंस के प्रोफेसर हैं। इंदौर के जीएसआईटीएस से उन्होंने इंजीनियरिंग की है। उन्होंने कहा - यह बात जरूर है कि आईआईटी की शिक्षण पद्धति बेहतर है लेकिन उसके अलावा भी कई संस्थान बेहतर शिक्षा देते हैं। आईआईटी जैसे इंस्टिट्यूट्स की वैल्यू तभी तक है जब तक सोसायटी और एम्पलॉयर इसकी डिग्री को स्वीकार रहे हैं। जिस दिन एम्पलॉयर्स को यह महसूस हुआ कि दूसरे इंस्टिट्यूट्स से भी उतने ही स्किल्ड और बेहतर स्टूडेंट्स मिल रहे हैं, आईआईटी का चार्म खत्म हो जाएगा। हालांकि अगले 20-22सालों तक तो यह नहीं होगा, लेकिन फिर भी स्टूडेंट्स को यह बात ध्यान रखना चाहिए।

डॉ. दीपक बी. फाटक

हर संस्थान में हो थिंकर्स लैब, जहां बच्चों को इनोवेशन की आज़ादी हो

अटल बिहारी इनोवेशन स्कीम के तहत देश के 500 स्कूलों में मेकर्स लैब बनाई जाने वाली हैं। इनके लिए स्कूलों का चयन किया जा रहा है। ये वो जगह होंगी जहां स्टूडेंट्स को इक्विपमेंट्स, टूल्स और मशीन्स के साथ छोड़ दिया जाएगा। वे अपनी क्रिएटिविटी और लॉजिक से जो बनाना चाहें वो बना सकेंगे। इससे उनकी रचनात्मकता और कल्पना विकसित होगी। इनोवेशन इसी तरह तो होता है। अभी हिंदुस्तान में इस तरह की लैब किसी भी इंजीनियरिंग कॉलेज में नहीं हैं जबकि विकसित देश अपने स्कूलों में ये सुविधा काफी पहले से दे रहे हैं। हमारे सभी इंजीनियरिंग और साइंस कॉलेजेस में यह होना चाहिए। इसके लिए आप सरकारी योजनाओं की राह मत ताकिए। संस्थान के अधिकारी खुद ऐसी सुविधाएं स्टूडेंट्स को उपलब्ध करवाएं। हर शहर देश को कुछ बेहतरीन इनोवेशन देगा।

The Times of India Date: 08.02.2018

Innovations In Science, Tech And Mgmt Discussed At Vaishnav Event

Shri Vaishnav Vidyapeeth Vishwavidyalaya organized a multidisciplinary international congress, Sanmantrana -2018 on 'Innovations in Science, Technology and Management - Challenges and Opportunities'. Event was sponsored by St Cloud State University (USA) and AICTE. It covered disciplines of engineering, architecture, social science, arts, forensic science, humanities and management. Participants from India and abroad including consultants, academicians, professionals and research scholars attended.

आईआईटी की तैयारी में ज़िंदगी के गणित से दूर हो जाते हैं बच्चे : डॉ. फाटक

इंदौर के जीएसआईटीएस से इंजीनियरिंग कर चुके आईआईटी बॉम्बे के प्रो. डॉ. दीपक बी. फाटक बुधवार को सन्मंत्रणा कॉन्फ्रेंस में शामिल होने आए, उन्होंने आईआईटी के लिए ड्रॉप लेने के मसले पर बातचीत की

सिटी रिपोर्टर | इंदौर

'आईआईटी जैसे संस्थानों में एडमिशन के लिए कई स्टूडेंट्स एक या दो साल का ड्रॉप लेते हैं। 12वीं के बाद के ये दो साल जिंदगी का बेहद खूबसूरत समय होता है लेकिन स्टूडेंट्स किताबों में डूबे रहते हैं। वो मैदान, मिट्टी और खेलों से दूर हो जाते हैं, जबकि ह्यूमन डेवलपमेंट के लिए ये ज्यादा जरूरी है। ज़िंदगी सिर्फ यही तो नहीं। जिसने कविताएं पढ़कर उनका आनंद नहीं लिया उसने शायद ज़िंदगी की लय ही नहीं पाई। सीने में धड़कते जज्बात का महसूस ही नहीं किया तो जीवन ही कहां जिया। एक संस्थान में दाखिला पाने के लिए ड्रॉप लेने वाले हमारे बच्चे फिजिक्स-केमिस्ट्री मैथ्स पढ़ते-पढ़ते ज़िंदगी के गणित से ही दूर हो जाते हैं। मेरा मानना है कि ड्रॉप लेने की जगह स्टूडेंट्स को आगे पढ़ाई जारी रखनी चाहिए। लाखों बच्चे जेईई देते हैं, ड्रॉप लेने के बाद भी सिलेक्शन की गारंटी तो नहीं होती।'

वैष्णव विद्यापीठ विश्वविद्यालय में इंटरनेशनल कॉन्फ्रेंस सन्मंत्रणा के आखिरी दिन आए डॉ. दीपक बी. फाटक ने ये बातें सिटी भास्कर से कहीं। वे आईआईटी बॉम्बे में कम्प्यूटर साइंस के प्रोफेसर हैं। इंदौर के जीएसआईटीएस से उन्होंने इंजीनियरिंग की है। उन्होंने कहा - यह बात जरूर है कि आईआईटी की शिक्षण पद्धति बेहतर है लेकिन उसके अलावा भी कई संस्थान बेहतर शिक्षा देते हैं। आईआईटी जैसे इंस्टिट्यूट्स की वैल्यू तभी तक है जब तक सोसायटी और एम्प्लॉयर इसकी डिग्री को स्वीकार रहे हैं। जिस दिन एम्प्लॉयर्स को यह महसूस हुआ कि दूसरे इंस्टिट्यूट्स से भी उतने ही स्किल्ड और बेहतर स्टूडेंट्स मिल रहे हैं, आईआईटी का चार्म खत्म हो जाएगा। हालांकि अगले 20-22सालों तक तो यह नहीं होगा, लेकिन फिर भी स्टूडेंट्स को यह बात ध्यान रखना चाहिए।

डॉ. दीपक बी. फाटक

हर संस्थान में हो थिंकर्स लैब, जहां बच्चों को इनोवेशन की आज़ादी हो

अटल बिहारी इनोवेशन स्कीम के तहत देश के 500 स्कूलों में मेकर्स लैब बनाई जाने वाली हैं। इनके लिए स्कूलों का चयन किया जा रहा है। ये वो जगह होंगी जहां स्टूडेंट्स को इक्विपमेंट्स, टूल्स और मशीन्स के साथ छोड़ दिया जाएगा। वे अपनी क्रिएटिविटी और लॉजिक से जो बनाना चाहें वो बना सकेंगे। इससे उनकी रचनात्मकता और कल्पना विकसित होगी। इनोवेशन इसी तरह तो होता है। अभी हिंदुस्तान में इस तरह की लैब किसी भी इंजीनियरिंग कॉलेज में नहीं हैं जबकि विकसित देश अपने स्कूलों में ये सुविधा काफी पहले से दे रहे हैं। हमारे सभी इंजीनियरिंग और साइंस कॉलेजेस में यह होना चाहिए। इसके लिए आप सरकारी योजनाओं की राह मत ताकिए। संस्थान के अधिकारी खुद ऐसी सुविधाएं स्टूडेंट्स को उपलब्ध करवाएं। हर शहर देश को कुछ बेहतरीन इनोवेशन देगा।

आर्टिफीशियल इंटेलीजेंस हमारे सपने भी बदल रहा, अब घर-गाड़ी नहीं आसान लाइफ है लक्ष्य

अमेरिका की सेंट क्लाउड स्टेट यूनिवर्सिटी जॉइंट डायरेक्टर डॉ. बेन बलिगा सोमवार को इंदौर आए, पढ़िए सिटी भास्कर से बातचीत

Experts' Speak

सिटी रिपोर्टर | इंदौर

"आर्टिफीशियल इंटेलीजेंस हमारी दुनिया, हमारे शहरों, जीने के अंदाज़ बल्कि हमारे सपनों को भी बदल रहा है। यह कैसे हो रहा वो मैं कुछ उदाहरणों से समझाता हूं। कैलिफोर्निया में अधिकतर लोग अब खुद की कार से नहीं, बल्कि रेंटेड कार से ऑफिस जाते हैं। लोग वहां कार खरीद नहीं रहे। इसे वे सिर्फ रोज़ की जरूरत मानते हुए एक सर्विस के तौर पर ले रहे हैं। अब भारत की मेट्रो-मिनी मेट्रो सिटीज़ में भी ऐसा होने लगा है। यंग प्रोफेशनल्स कार नहीं खरीद रहे, बल्कि कैब सर्विसेस का इस्तेमाल कर रहे हैं।

भारत में ट्रैफिक की समस्या हर दूसरे शहर में है। इसे सुलझाने के लिए अगले कुछ सालों में ह्यूमनलेस कारें हिंदुस्तान के शहरों में भी नज़र आने लगेंगी। न्यू ऐज प्रोफेशनल्स यानी 23-24 साल के युवा का सपना 'अपना घर, अपनी गाड़ी' नहीं है। वो इन्हें सिर्फ जरूरतों की तरह देखने लगे हैं। आर्टिफीशियल इंटेलीजेंस और इंटरनेट ऑफ थिंग्स के चलते मिल रही सुविधाएं सोचने का तरीका बदल रही हैं।

अभी भारत में यह नवाचार उस स्तर पर नहीं है जितना विदेशों में है, लेकिन जल्द ही फौज से लेकर मेडिकल, फूड, बिज़नेस, ट्रांसपोर्ट और स्टार्टअप तक हर इंडस्ट्री पर इसका असर होगा। स्कूल कॉलेज स्टूडेंट्स इस बदलाव के मुताबिक कॅरियर या बिज़नेस मैपिंग करें। दुनिया तेजी से बदल रही है।

वैष्णव यूनिवर्सिटी में सोमवार से शुरू हुई अंतरराष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस सन्मंत्रणा में बी आर अम्बेडकर एनआईटी, जालंधर के डायरेक्टर डॉ. ललित अवस्थी और वैष्णव यूनिवर्सिटी के वाइस चांसलर उपेंद्र धर ने भी संबोधित किया।

एक्सपर्ट्स ने सन्मंत्रणा कॉन्फ्रेंस में स्टूडेंट्स और फैकल्टीज़ से इनोवेशन और तकनीक पर बात की।

डॉ. बेन बलिगा

जो आज 14 साल के, 10 साल बाद उनकी लाइफ अलग होगी

भास्कर से चर्चा में डॉ. बलिगा ने बताया कि चार नई तकनीकें दुनिया को बदल रही हैं। ये हैं आर्टिफीशियल इंटेलीजेंस, क्लाउड, इंटरनेट ऑफ थिंग्स और ब्लॉकचेन। जो बच्चे आज 14 साल के हैं, 10 साल बाद उनका जीवन आज से बिलकुल अलग होगा। आज जिनकी उम्र 22 साल है उन्होंने ब्लैक एंड व्हाइट टीवी देखा ही नहीं। एक कमरे के बराबर होता था पहले कम्प्यूटर। अब पॉकेट में है। 10 साल बाद वो ऑफिस में बैठकर घर में रखे माइक्रोवेव अवन में खाना बना सकेगा। वहीं से बैठे-बैठे अपने पेरेंट्स को पिक करने गाड़ी एअरपोर्ट भेज सकेगा। एसी, टीवी, फ्रिज, गीज़र सबकुछ एक डिवाइस से दूसरे शहर से भी ऑपरेट कर सकेगा।

महज़ एक ब्लड टेस्ट बता सकेगा कैंसर है या नहीं

हाल ही में अमेरिका के जॉन हॉपकिन्स किमेल कैंसर सेंटर में रिसर्चर्स ने एक ऐसा ब्लड टेस्ट इजाद किया है जिससे आठ तरह के कैंसर्स डिटेक्ट हो जाएगा। इसके लिए कोई सर्जरी नहीं करना होगी। यह सिम्पल स्क्रीनिंग से बता देगा शरीर में कैंसर है या नहीं। और वह भी सिम्टम्स सामने आने के काफी समय पहले। ओवरी, लिवर, पेट, पेनक्रियाज़, आहार नली, कोलोरेक्टम, फेफड़े और ब्रेस्ट कैंसर जिनसे सबसे ज्यादा मौतें होती हैं उन्हें एक ब्लड टेस्ट से पकड़ सकेंगे। इस टेस्ट का नाम है कैंसरसीक।

मशीन लर्निंग : मशीनें भी करेंगी कम्यूनिकेट

मशीन्स का इस्तेमाल हम आज भी कर रहे हैं, लेकिन उन्हें चलाने के लिए या ऑपरेट करने के लिए हमें मनुष्य यानी ह्यूमन स्किल की ज़रूरत पड़ती है। आर्टिफीशियल इंटेलीजेंस का मतलब है ऐसी तकनीक जिससे मशीन्स को एक बार इंस्ट्रक्शन दे दी जाए और वे पूरा काम खुद करें। इस तकनीक के ज़रिए मशीन्स आपस में कम्यूनिकेट भी करेंगी। कम्प्यूटर आने के बाद डेटा बहुत मात्रा में जमा होने लगा है। इसे रीड करने के लिए ह्यूमन स्किल्स चाहिए। लेकिन अब मशीन्स खुद बल्क डेटा रीड कर सकेंगी और उन्हें पैटर्न्स में बांट सकेंगी।

दूसरे देशों से टेक्नोलॉजी खरीदना न पड़े, इसलिए आइसोलेटेड वर्क को कनेक्ट करना होगा

एनआईटी जालंधर के डायरेक्टर डॉ. ललित अवस्थी भी सन्मंत्रणा में शामिल हुए। इंटरनेट ऑफ थिंग्स पर उन्होंने कहा 'इनोवेशन, एक पहिये की तरह है, जो सफलता तक पहुंचाता है। हमारे यहां काम हो रहा है, रिसर्च हो रही हैं, लेकिन हर कोई अपना-अपना आइसोलेटेड वर्क कर रहा है। जिसे एक-दूसरे से कनेक्ट करने की जरूरत है। क्योंकि यह रिसर्च यदि कनेक्ट की जाएं और एक सेटअप तैयार कर बड़े स्तर पर एक साथ काम किया जाए, तो निश्चित ही हमें दूसरे देशों से टेक्नोलॉजी खरीदना नहीं पड़ेगी। वहीं नए अवसर भी पैदा होंगे। इंटरनेट की एक बड़ी चुनौती है। यदि आज 1 बिलियन लोग इसका इस्तेमाल कर रहे हैं, तो अगले 5 साल में इसके 5 गुना इंटरनेट से कनेक्ट रहेंगे। जरूरी है कि स्पीड बढ़ाई जाए। हमारे देश में अभी सिर्फ 4जी पर काम हो रहा है, जबकि अन्य कई देश 5जी से भी आगे हैं।

आर्टिफीशियल इंटेलीजेंस हमारे सपने भी बदल रहा, अब घर-गाड़ी नहीं आसान लाइफ है लक्ष्य

अमेरिका की सेंट क्लाउड स्टेट यूनिवर्सिटी जॉइंट डायरेक्टर डॉ. बेन बलिगा सोमवार को इंदौर आए, पढ़िए सिटी भास्कर से बातचीत

Experts' Speak

सिटी रिपोर्टर | इंदौर

"आर्टिफीशियल इंटेलीजेंस हमारी दुनिया, हमारे शहरों, जीने के अंदाज़ बल्कि हमारे सपनों को भी बदल रहा है। यह कैसे हो रहा वो मैं कुछ उदाहरणों से समझाता हूं। कैलिफोर्निया में अधिकतर लोग अब खुद की कार से नहीं, बल्कि रेंटेड कार से ऑफिस जाते हैं। लोग वहां कार खरीद नहीं रहे। इसे वे सिर्फ रोज़ की जरूरत मानते हुए एक सर्विस के तौर पर ले रहे हैं। अब भारत की मेट्रो-मिनी मेट्रो सिटीज़ में भी ऐसा होने लगा है। यंग प्रोफेशनल्स कार नहीं खरीद रहे, बल्कि कैब सर्विसेस का इस्तेमाल कर रहे हैं।

भारत में ट्रैफिक की समस्या हर दूसरे शहर में है। इसे सुलझाने के लिए अगले कुछ सालों में ह्यूमनलेस कारें हिंदुस्तान के शहरों में भी नज़र आने लगेंगी। न्यू ऐज प्रोफेशनल्स यानी 23-24 साल के युवा का सपना 'अपना घर, अपनी गाड़ी' नहीं है। वो इन्हें सिर्फ जरूरतों की तरह देखने लगे हैं। आर्टिफीशियल इंटेलीजेंस और इंटरनेट ऑफ थिंग्स के चलते मिल रही सुविधाएं सोचने का तरीका बदल रही हैं।

अभी भारत में यह नवाचार उस स्तर पर नहीं है जितना विदेशों में है, लेकिन जल्द ही फौज से लेकर मेडिकल, फूड, बिज़नेस, ट्रांसपोर्ट और स्टार्टअप तक हर इंडस्ट्री पर इसका असर होगा। स्कूल कॉलेज स्टूडेंट्स इस बदलाव के मुताबिक कॅरियर या बिज़नेस मैपिंग करें। दुनिया तेजी से बदल रही है।

वैष्णव यूनिवर्सिटी में सोमवार से शुरू हुई अंतरराष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस सन्मंत्रणा में बी आर अम्बेडकर एनआईटी, जालंधर के डायरेक्टर डॉ. ललित अवस्थी और वैष्णव यूनिवर्सिटी के वाइस चांसलर उपेंद्र धर ने भी संबोधित किया।

एक्सपर्ट्स ने सन्मंत्रणा कॉन्फ्रेंस में स्टूडेंट्स और फैकल्टीज़ से इनोवेशन और तकनीक पर बात की।

डॉ. बेन बलिगा

जो आज 14 साल के, 10 साल बाद उनकी लाइफ अलग होगी

भास्कर से चर्चा में डॉ. बलिगा ने बताया कि चार नई तकनीकें दुनिया को बदल रही हैं। ये हैं आर्टिफीशियल इंटेलीजेंस, क्लाउड, इंटरनेट ऑफ थिंग्स और ब्लॉकचेन। जो बच्चे आज 14 साल के हैं, 10 साल बाद उनका जीवन आज से बिलकुल अलग होगा। आज जिनकी उम्र 22 साल है उन्होंने ब्लैक एंड व्हाइट टीवी देखा ही नहीं। एक कमरे के बराबर होता था पहले कम्प्यूटर। अब पॉकेट में है। 10 साल बाद वो ऑफिस में बैठकर घर में रखे माइक्रोवेव अवन में खाना बना सकेगा। वहीं से बैठे-बैठे अपने पेरेंट्स को पिक करने गाड़ी एअरपोर्ट भेज सकेगा। एसी, टीवी, फ्रिज, गीज़र सबकुछ एक डिवाइस से दूसरे शहर से भी ऑपरेट कर सकेगा।

महज़ एक ब्लड टेस्ट बता सकेगा कैंसर है या नहीं

हाल ही में अमेरिका के जॉन हॉपकिन्स किमेल कैंसर सेंटर में रिसर्चर्स ने एक ऐसा ब्लड टेस्ट इजाद किया है जिससे आठ तरह के कैंसर्स डिटेक्ट हो जाएगा। इसके लिए कोई सर्जरी नहीं करना होगी। यह सिम्पल स्क्रीनिंग से बता देगा शरीर में कैंसर है या नहीं। और वह भी सिम्टम्स सामने आने के काफी समय पहले। ओवरी, लिवर, पेट, पेनक्रियाज, आहार नली, कोलोरेक्टम, फेफड़े और ब्रेस्ट कैंसर जिनसे सबसे ज्यादा मौतें होती हैं उन्हें एक ब्लड टेस्ट से पकड़ सकेंगे। इस टेस्ट का नाम है कैंसरसीक।

मशीन लर्निंग : मशीनें भी करेंगी कम्यूनिकेट

मशीन्स का इस्तेमाल हम आज भी कर रहे हैं, लेकिन उन्हें चलाने के लिए या ऑपरेट करने के लिए हमें मनुष्य यानी ह्यूमन स्किल की जरूरत पड़ती है। आर्टिफीशियल इंटेलीजेंस का मतलब है ऐसी तकनीक जिससे मशीन्स को एक बार इंस्ट्रक्शन दे दी जाए और वे पूरा काम खुद करें। इस तकनीक के ज़रिए मशीन्स आपस में कम्यूनिकेट भी करेंगी। कम्प्यूटर आने के बाद डेटा बहुत मात्रा में जमा होने लगा है। इसे रीड करने के लिए ह्यूमन स्किल्स चाहिए। लेकिन अब मशीन्स खुद बल्क डेटा रीड कर सकेंगी और उन्हें पैटर्न्स में बांट सकेंगी।

दूसरे देशों से टेक्नोलॉजी खरीदना न पड़े, इसलिए आइसोलेटेड वर्क को कनेक्ट करना होगा

एनआईटी जालंधर के डायरेक्टर डॉ. ललित अवस्थी भी सन्मंत्रणा में शामिल हुए। इंटरनेट ऑफ थिंग्स पर उन्होंने कहा 'इनोवेशन, एक पहिये की तरह है, जो सफलता तक पहुंचाता है। हमारे यहां काम हो रहा है, रिसर्च हो रही हैं, लेकिन हर कोई अपना-अपना आइसोलेटेड वर्क कर रहा है। जिसे एक-दूसरे से कनेक्ट करने की जरूरत है। क्योंकि यह रिसर्च यदि कनेक्ट की जाएं और एक सेटअप तैयार कर बड़े स्तर पर एक साथ काम किया जाए, तो निश्चित ही हमें दूसरे देशों से टेक्नोलॉजी खरीदना नहीं पड़ेगी। वहीं नए अवसर भी पैदा होंगे। इंटरनेट की एक बड़ी चुनौती है। यदि आज 1 बिलियन लोग इसका इस्तेमाल कर रहे हैं, तो अगले 5 साल में इसके 5 गुना इंटरनेट से कनेक्ट रहेंगे। जरूरी है कि स्पीड बढ़ाई जाए। हमारे देश में अभी सिर्फ 4जी पर काम हो रहा है, जबकि अन्य कई देश 5जी से भी आगे हैं।

इनोवेशन नहीं हुए तो तकनीक में विदेशों से पिछड़ जाएंगे हम

श्री वैष्णव विद्यापीठ विश्वविद्यालय में तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस का शुभारंभ

पत्रिका PLUS रिपोर्टर

इंदौर ● हमारे देश में सबसे बड़ी समस्या इनोवेशन की है। जब इनोवेशन की बात आती है तो हम विदेशों की बातें करने लगते है जबकि हमारे देश में अच्छे इनोवेशन हुए हैं। ऐसे इनोवेशन जो देश व दुनिया में यूज किए जा रहे है। अगर हमें शीर्ष पर रहना है तो नई टेक्नोलॉजी से अपडेट रहना जरूरी है। हमें नए-नए इनोवेशन करना होंगे ताकि हम दुनिया में टेक्नोलॉजी सेक्टर में भी आगे रह सकें। इसके लिए हमें नए इंजीनियर्स तैयार करना होंगे और उन्हे विदेशों मे यूज की जा रही नई टेक्निक से रूबरू कराना होगा। यह कहना है राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान जालंधर के निदेशक डॉ. ललित अवस्थी का। वह सोमवार से वैष्णव विद्यापीठ विश्वविद्यालय में सोमवार से शुरू हुई तीन दिनी इंटरनेशनल कांग्रेस सन्मन्त्रणा कॉन्फ्रेंस में बोल रहे थे। यह कॉन्फ्रेस विज्ञान, प्रौद्योगिकी और प्रबंधन में अभिनव चुनौतियों और अवसर पर आधारित है।

इंटरनेट ऑफ थिंग्स

अमरीका के सेंट क्लाउड विश्वविद्यालय मिनेसिटा के निदेशक बेन बलिगा ने इंटरनेट ऑफ थिंग्स सब्जेक्ट पर कहा कि इंडिया में टैलेंटेड लोगों की कमी नहीं है। यहां जरूरत सही गाइडेंस की है। नई टेक्निक के बारे से रूबरू करवाने की है। इंटरनेट ऑफ थिंग्स इसी बात पर आधारित है कि आप किस तरह नई टेक्निक को अपनाकर देशसेवा कर सकते हैं। आप खुद नई टेक्निक से अपडेट रहेंगे तो विदेशों में बैठकर भी अपने देश और घरों को सुरक्षित रख सकते है। मेरे मोबाइल में ऐसी टेक्निक है जिससे मैं यहां बैठकर भी अपने घर के वॉशिंग मशीन, टीवी, फैन, डोर बेल और कार सहित हर चीज को ऑपरेट कर सकता हूं। इसे ही इंटरनेट ऑफ थिंग्स कहा गया है।

इंटरनेट पर बढ़ी निर्भरता

विश्वविद्यालय के वाइस चांसलर प्रो. उपेंद्र धर ने कहा कि इंडिया में भी ऑटोमोबाइल सेक्टर में टेक्नोलॉजी काफी आगे निकल गई है। वो वक्त दूर नहीं जब इंडिया में ड्राइवरलेस कार चलेगी। हमने नई टेक्निक का इनोवेशन नहीं किया तो दूसरे देशों से पीछे रह जाएंगे। आज हमारा हर कार्य इंटरनेट और तकनीक पर निर्भर हो गया है।

75 शोधकर्ता आएंगे

कॉन्फ्रेंस में देश-विदेश के 60 से ज्यादा संस्थानों के 75 शोधकर्ता शामिल होंगे। सभी अपने द्वारा की गई शोध को बताएंगे। सन्मन्त्रणा के शुभारंभ के मौके पर मुख्य अतिथि डॉ. ललित अवस्थी, बीआर आंबेडकर मौजूद थे। साथ ही विज्ञान, प्रोद्योगिकी एवं प्रबंधन के क्षेत्र में 17 कार्यशाला लगाई जाएगी। इसमें 900 प्रतिभागी भाग लेंगे। सभी ने इंटरनेट ऑफ थिंग्स के साथ इस्तेमाल की जाने वाली विभिन्न सेवाओं पर चर्चा की। कार्यक्रम में विवि के चांसलर पुरुषोत्तमदास पसारी मौजूद थे। सचिव कमलनाथ भोरडिया ने आभार माना।

पत्रिका Tue, 06 February 2018
epaper.patrika.com//c/26029424

इनोवेशन नहीं हुए तो तकनीक में विदेशों से पिछड़ जाएंगे हम

श्री वैष्णव विद्यापीठ विश्वविद्यालय में तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस का शुभारंभ

पत्रिका PLUS रिपोर्टर

इंदौर ● हमारे देश में सबसे बड़ी समस्या इनोवेशन की है। जब इनोवेशन की बात आती है तो हम विदेशों की बातें करने लगते है जबकि हमारे देश में अच्छे इनोवेशन हुए हैं। ऐसे इनोवेशन जो देश व दुनिया में यूज किए जा रहे है। अगर हमें शीर्ष पर रहना है तो नई टेक्नोलॉजी से अपडेट रहना जरूरी है। हमें नए-नए इनोवेशन करना होंगे ताकि हम दुनिया में टेक्नोलॉजी सेक्टर में भी आगे रह सकें। इसके लिए हमें नए इंजीनियर्स तैयार करना होंगे और उन्हें विदेशों मे यूज की जा रही नई टेक्निक से रूबरू कराना होगा। यह कहना है राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान जालंधर के निदेशक डॉ. ललित अवस्थी का। वह सोमवार से वैष्णव विद्यापीठ विश्वविद्यालय में सोमवार से शुरू हुई तीन दिनी इंटरनेशनल कांग्रेस सन्मन्त्रणा कॉन्फ्रेंस में बोल रहे थे। यह कॉन्फ्रेंस विज्ञान, प्रौद्योगिकी और प्रबंधन में अभिनव चुनौतियों और अवसर पर आधारित है।

इंटरनेट ऑफ थिंग्स

अमरीका के सेंट क्लाउड विश्वविद्यालय मिनेसिटा के निदेशक बेन बलिगा ने इंटरनेट ऑफ थिंग्स सब्जेक्ट पर कहा कि इंडिया में टैलेंटेड लोगों की कमी नहीं है। यहां जरूरत सही गाइडेंस की है। नई टेक्निक के बारे से रूबरू करवाने की है। इंटरनेट ऑफ थिंग्स इसी बात पर आधारित है कि आप किस तरह नई टेक्निक को अपनाकर देशसेवा कर सकते हैं। आप खुद नई टेक्निक से अपडेट रहेंगे तो विदेशों में बैठकर भी अपने देश और घरों को सुरक्षित रख सकते है। मेरे मोबाइल में ऐसी टेक्निक है जिससे मैं यहां बैठकर भी अपने घर के वॉशिंग मशीन, टीवी, फैन, डोर बेल और कार सहित हर चीज को ऑपरेट कर सकता हूं। इसे ही इंटरनेट ऑफ थिंग्स कहा गया है।

इंटरनेट पर बढ़ी निर्भरता

विश्वविद्यालय के वाइस चांसलर प्रो. उपेंद्र धर ने कहा कि इंडिया में भी ऑटोमोबाइल सेक्टर में टेक्नोलॉजी काफी आगे निकल गई है। वो वक्त दूर नहीं जब इंडिया में ड्राइवरलेस कार चलेगी। हमने नई टेक्निक का इनोवेशन नहीं किया तो दूसरे देशों से पीछे रह जाएंगे। आज हमारा हर कार्य इंटरनेट और तकनीक पर निर्भर हो गया है।

75 शोधकर्ता आएंगे

कॉन्फ्रेंस में देश-विदेश के 60 से ज्यादा संस्थानों के 75 शोधकर्ता शामिल होंगे। सभी अपने द्वारा की गई शोध को बताएंगे। सन्मन्त्रणा के शुभारंभ के मौके पर मुख्य अतिथि डॉ. ललित अवस्थी, बीआर आंबेडकर मौजूद थे। साथ ही विज्ञान, प्रौद्योगिकी एवं प्रबंधन के क्षेत्र में 17 कार्यशाला लगाई जाएगी। इसमें 900 प्रतिभागी भाग लेंगे। सभी ने इंटरनेट ऑफ थिंग्स के साथ इस्तेमाल की जाने वाली विभिन्न सेवाओं पर चर्चा की। कार्यक्रम में विवि के चांसलर पुरुषोत्तमदास पसारी मौजूद थे। सचिव कमलनाथ भोरडिया ने आभार माना।

पत्रिका Tue, 06 February 2018
epaper.patrika.com//c/26029424

अंतरराष्ट्रीय कांग्रेस सन्मन्त्रणा 5 फरवरी से

इंदौर | साइंस, टेक्नोलॉजी और मैनेजमेंट में इनोवेशन, चैलेंज और अपॉर्च्युनिटीज़ पर अंतरराष्ट्रीय कांग्रेस सन्मन्त्रणा 5 फरवरी से होगी। वैष्णव विद्यापीठ विश्वविद्यालय में होने वाली इसतीन दिनी कॉन्फ्रेंस देश-विदेश के शिक्षाविद् और रिसर्चर्स शामिल होंगे। मुख्य अतिथि सेंट क्लाउड स्टेट यूनिवर्सिटी, मेनेसोटा के डायरेक्टर प्रो. बेन बलिगा, एन.आई.टी जालंधर के डायरेक्टर डॉ. ललित अवस्थी और आई.आई.टी. मुंबई के प्रोफेसर पद्मश्री डॉ. डी.बी. फाटक होंगे।

सिटी प्लस

'सन्मन्त्रणा' में देश-विदेश के शिक्षाविद एवं शोधकर्ता प्रस्तुत करेंगे रिसर्च पेपर

इंदौर|श्री वैष्णव विद्यापीठ विश्वविद्यालय में अंतर्राष्ट्रीय कांग्रेस 'सन्मन्त्रणा-2018' का आयोजन 5 से 7 फरवरी तक किया जाएगा। सन्मन्त्रणा का मुख्य विषय 'विज्ञान, प्रौद्योगिकी और प्रबंधन में नवाचार-चुनौतियां और अवसर' है। सन्मन्त्रणा-2018 का शुभारंभ एनआईटी, जालंधर के निदेशक डॉ. ललित अवस्थी एवं प्रो.बेन बलिगा, डायरेक्टर, सेंट क्लाउड स्टेट यूनिवर्सिटी, मेनेसोटा करेंगे। समापन सत्र के मुख्य अतिथि पद्मश्री डॉ. डीबी फाटक, प्रोफेसर, आईआईटी बॉम्बे होंगे। विश्वविद्यालय कुलपति डॉ.उपेन्द्र धर ने बताया कि सन्मन्त्रणा अंतर्राष्ट्रीय कांग्रेस में देश-विदेश के शिक्षाविद एवं शोधकर्ता अपने शोधपत्र प्रस्तुत करेगें। सन्मन्त्रणा-2018 के कोर्डिनेटर डॉ.आनन्द राजावत है।

अंतरराष्ट्रीय कांग्रेस सन्मन्त्रणा 5 फरवरी से

इंदौर | साइंस, टेक्नोलॉजी और मैनेजमेंट में इनोवेशन, चैलेंज और अपॉर्च्युनिटीज़ पर अंतरराष्ट्रीय कांग्रेस सन्मन्त्रणा 5 फरवरी से होगी। वैष्णव विद्यापीठ विश्वविद्यालय में होने वाली इसतीन दिनी कॉन्फ्रेंस देश-विदेश के शिक्षाविद् और रिसर्चर्स शामिल होंगे। मुख्य अतिथि सेंट क्लाउड स्टेट यूनिवर्सिटी, मेनेसोटा के डायरेक्टर प्रो. बेन बलिगा, एन.आई.टी जालंधर के डायरेक्टर डॉ. ललित अवस्थी और आई.आई.टी. मुंबई के प्रोफेसर पद्मश्री डॉ. डी.बी. फाटक होंगे।

'सन्मन्त्रणा' में देश-विदेश के शिक्षाविद एवं शोधकर्ता प्रस्तुत करेंगे रिसर्च पेपर

इंदौर|श्री वैष्णव विद्यापीठ विश्वविद्यालय में अंतर्राष्ट्रीय कांग्रेस 'सन्मन्त्रणा-2018' का आयोजन 5 से 7 फरवरी तक किया जाएगा। सन्मन्त्रणा का मुख्य विषय 'विज्ञान, प्रौद्योगिकी और प्रबंधन में नवाचार-चुनौतियां और अवसर' है। सन्मन्त्रणा-2018 का शुभारंभ एनआईटी, जालंधर के निदेशक डॉ. ललित अवस्थी एवं प्रो.बेन बलिगा, डायरेक्टर, सेंट क्लाउड स्टेट यूनिवर्सिटी, मेनेसोटा करेंगे। समापन सत्र के मुख्य अतिथि पद्मश्री डॉ. डीबी फाटक, प्रोफेसर, आईआईटी बॉम्बे होंगे। विश्वविद्यालय कुलपति डॉ.उपेन्द्र धर ने बताया कि सन्मन्त्रणा अंतर्राष्ट्रीय कांग्रेस में देश-विदेश के शिक्षाविद एवं शोधकर्ता अपने शोधपत्र प्रस्तुत करेगें। सन्मन्त्रणा-2018 के कोर्डिनेटर डॉ.आनन्द राजावत है।

वैष्णव विद्यापीठ में तीन दिवसीय इंटरनेशनल संमंत्रणा 5 से

इंदौर ● श्री वैष्णव विद्यापीठ विश्वविद्यालय द्वारा तीन दिवसीय इंटरनेशनल कांग्रेस 'संमंत्रणा' 5 फरवरी से शुरू होगा। इसमे देश-विदेश के शिक्षाविद्, शोधकर्ता अपने शोधपत्र प्रस्तुत करेगें। सेंट क्लाउड स्टेट यूनिवर्सिटी, मेनेसोटा के निदेशक प्रो. बेन बलिगा, एन.आई.टी.जालंधर के निदेशक डॉ. ललीत अवस्थी ,आई.आई.टी. मुंबई के प्रोफेसर पद्मश्री डॉ. डी. बी. फाटक अपने शोधपत्र पेश करेंगे। इसमें यह कार्यक्रम विज्ञान, प्रौद्योगिकी और प्रबंधन में नवाचार -चुनौतियां और अवसर है' पर अधारित रहेगा। कार्यक्रम का शुभारंभ डॉ. ललीत अवस्थी एवं प्रो. बेन बलिगा, करेंगे । समापन सत्र के मुख्य अतिथि पद्मश्री डॉ. डी. बी. फाटक, प्रोफेसर, आई.आई.टी. बाम्बे होगें। विश?वविद्यालय कुलपति डॉ उपेन्द्र धर ने बताया कि सन्मन्त्रणा - अंतराष्ट्रीय कांग्रेस में देश-विदेश के शिक्षाविद एवं शोधकर्ता अपने शोधपत्र प्रस्तुत करेगें । सन्मन्त्रणा-2018 के कोर्डिनेटर डॉ. आनंद राजावत है।

श्री विद्यापीठ शीर्ष राष्ट्रीय संस्थानों में शामिल

इंदौर ● श्री वैष्णव विद्यापीठ विश?वविद्यालय इंदौर की फैकल्टी ने राष्ट्रीय स्तर पर संस्थान का नाम रोशन किया है। मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर 'एंबेडेड सिस्टम एवं रोबोटिक्स' में शिक्षा प्रसार के लिए

ई-यंत्रा परियोजना,आईसीटी आईआईटी मुंबई द्वारा आयोजित की गई। इसके पहले चरण 'टास्क बेस्ड ट्रेनिंग-2017' में श्री वैष्णव विद्यापीठ विश?वविद्यालय के प्रीत जैन, शिराज हुसैन, प्रीतेश कुमार जैन और पूजा डबोवाले ने भाग लिया। शीर्ष 9 राष्ट्रीय संस्थानों में ए सर्टिफिकेट प्राप्त कर द्वितीय चरण में प्रवेश किया। 'टीबीटी चैलेंज-2017' में पुनः सम्मिलित होकर शीर्ष 4 राष्ट्रीय संस्थानों में जगह बनाई। संस्थान के कुलाधिपति पुरुषोत्तमदास पसारी, कुलपति डॉ उपिंदर धर एवं वैष्णव प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान संस्थान के निदेशक डॉ नमित गुप्ता ने टीम को बधाई दी।

वैष्णव विद्यापीठ में तीन दिवसीय इंटरनेशनल संमंत्रणा 5 से

इंदौर ● श्री वैष्णव विद्यापीठ विश्वविद्यालय द्वारा तीन दिवसीय इंटरनेशनल कांग्रेस 'संमंत्रणा' 5 फरवरी से शुरू होगा। इसमे देश-विदेश के शिक्षाविद्, शोधकर्ता अपने शोधपत्र प्रस्तुत करेगें। सेंट क्लाउड स्टेट यूनिवर्सिटी, मेनेसोटा के निदेशक प्रो. बेन बलिगा, एन.आई.टी.जालंधर के निदेशक डॉ. ललीत अवस्थी ,आई.आई.टी. मुंबई के प्रोफेसर पद्मश्री डॉ. डी. बी. फाटक अपने शोधपत्र पेश करेंगे। इसमें यह कार्यक्रम विज्ञान, प्रौद्योगिकी और प्रबंधन में नवाचार -चुनौतियां और अवसर है' पर अधारित रहेगा। कार्यक्रम का शुभारंभ डॉ. ललीत अवस्थी एवं प्रो. बेन बलिगा, करेंगे । समापन सत्र के मुख्य अतिथि पद्मश्री डॉ. डी. बी. फाटक, प्रोफेसर, आई.आई.टी. बाम्बे होगें। विश?वविद्यालय कुलपति डॉ उपेन्द्र धर ने बताया कि सन्मन्त्रणा - अंतराष्ट्रीय काग्रेस में देश-विदेश के शिक्षाविद एवं शोधकर्ता अपने शोधपत्र प्रस्तुत करेगें । सन्मन्त्रणा-2018 के कोर्डिनेटर डॉ. आनन्द राजावत है।

श्री विद्यापीठ शीर्ष राष्ट्रीय संस्थानों में शामिल

इंदौर ● श्री वैष्णव विद्यापीठ विश?वविद्यालय इंदौर की फैकल्टी ने राष्ट्रीय स्तर पर संस्थान का नाम रोशन किया है। मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर 'एंबेडेड सिस्टम एवं रोबोटिक्स' में शिक्षा प्रसार के लिए

ई-यंत्रा परियोजना,आईसीटी आईआईटी मुंबई द्वारा आयोजित की गई। इसके पहले चरण 'टास्क बेस्ड ट्रेनिंग-2017' में श्री वैष्णव विद्यापीठ विश?वविद्यालय के प्रीत जैन, शिराज हुसैन, प्रीतेश कुमार जैन और पूजा डबोवाले ने भाग लिया। शीर्ष 9 राष्ट्रीय संस्थानों में ए सर्टिफिकेट प्राप्त कर द्वितीय चरण में प्रवेश किया। 'टीबीटी चैलेंज-2017' में पुनः सम्मिलित होकर शीर्ष 4 राष्ट्रीय संस्थानों में जगह बनाई। संस्थान के कुलाधिपति पुरुषोत्तमदास पसारी, कुलपति डॉ उपिंदर धर एवं वैष्णव प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान संस्थान के निदेशक डॉ नमित गुप्ता ने टीम को बधाई दी।